छायावाद की प्रतिनिधि हस्ताक्षर

महादेवी वर्मा

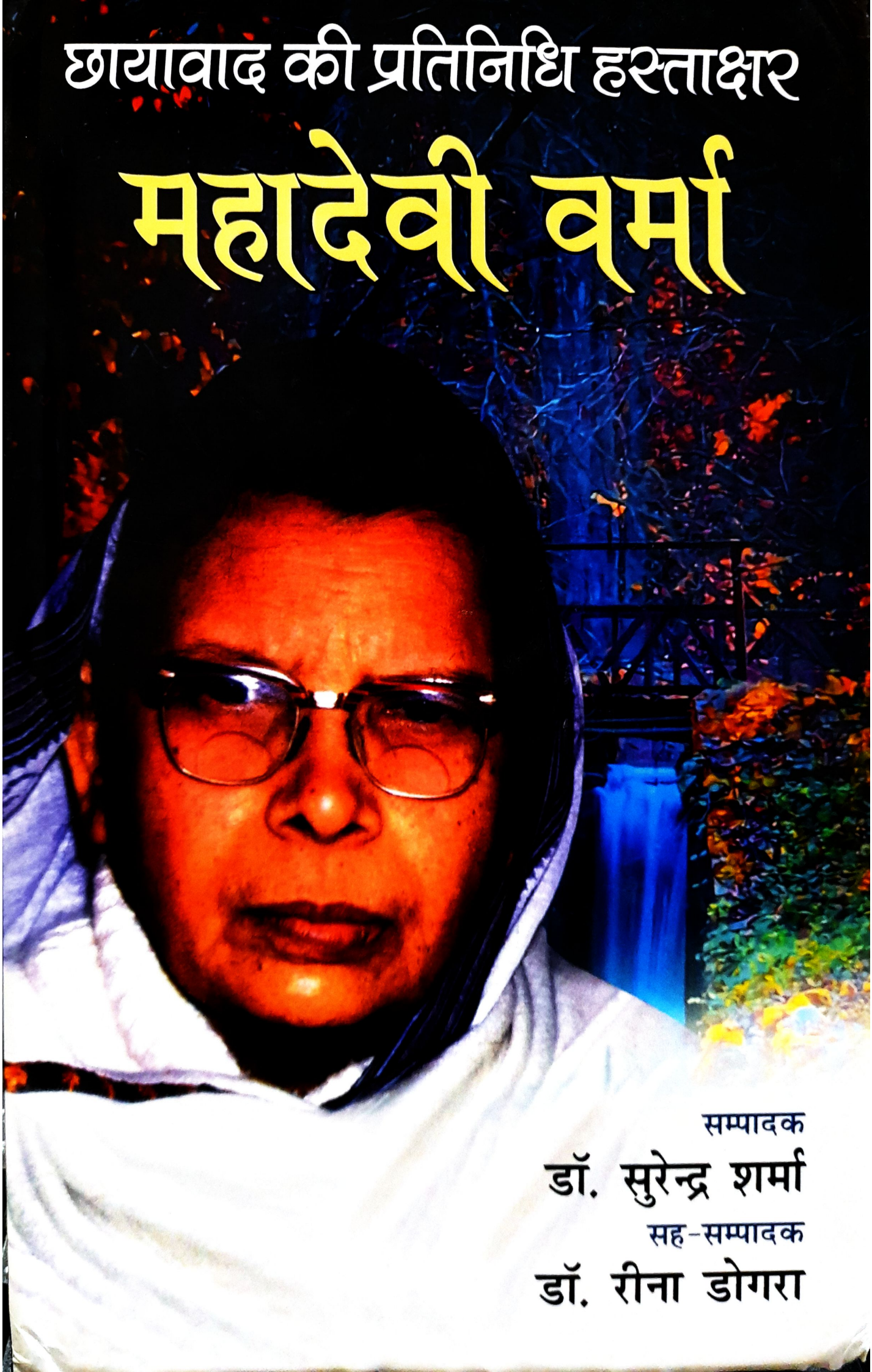

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

सह-सम्पादक

डॉ. रीना डोगरा

ISBN : **978-93-91515-28-7**

© : संपादक

प्रकाशक : मनीष पब्लिकेशन्स

471/10, ए-ब्लॉक, पार्ट-द्वितीय,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
मो. नं. 09968762953
email : manishpublications@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : ₹ 650/-

शब्द संयोजक : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली

आवरण : अमित

मुद्रक : पूजा ऑफसेट, जगतपुरी, दिल्ली-110093

Chayavad Ki Pratinidhi Hastakshar : Mahadevi Verma
Editor Dr. Surendra Sharma Co-editor Dr. Reena Dogra

अनुक्रम

	दो शब्द	v
1.	छायावाद की प्रतिनिधि हस्ताक्षर : महादेवी वर्मा **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	13
2.	महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में निरूपित स्त्री प्रश्न **डॉ. ओम प्रकाश सैनी**	22
3.	महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित ग्रामीण जीवन **डॉ. रीना डोगरा**	34
4.	महादेवी वर्मा की कविता में सौन्दर्य बोध **डॉ. जितेन्द्र कुमार**	40
5.	महादेवी वर्मा के काव्य में गीत तत्व **डॉ.वै. कस्तूरी बाई**	48
6.	विरहानुभूति काव्य और महादेवी वर्मा **डॉ. राजेश्वरी चन्द्राकर**	55
7.	महादेवी वर्मा के संस्मरणों में चित्रित निशक्तजन **डॉ. कविता यादव**	61
8.	शिल्प विधान की दृष्टि से महादेवी वर्मा का काव्य **डॉ. प्रियंका**	66
9.	महादेवी का काव्य और वेदना **प्रो. मीना कुमारी**	73
10.	शिक्षा से ही मिलेगी नारी को बंधनों से मुक्ति - महादेवी वर्मा **डॉ. राजन तनवन**	76
11.	आधुनिक युग की मीरा : महादेवी वर्मा **वीरेटि अनुराधा**	80
12.	महादेवी वर्मा के काव्य में नारी चेतना व विद्रोह का स्वरूप **छविन्दर कुमार**	87
13.	महादेवी वर्मा के साहित्य में सामाजिक चेतना **डॉ. हिमेन्द्र पाल काशव**	95

महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में निरूपित स्त्री प्रश्न

डॉ. ओम प्रकाश सैनी
(डी. लिट्), एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
आर.के. एस. डी. कॉलेज, कैथल, हरियाणा

भारतीय स्त्री की स्थिति में आदिम युग की स्त्री की परवशता और पूर्ण विकसित समाज के नारीत्व की गरिमा का विचित्र सम्मिश्रण है। उसके प्रति समाज की श्रद्धा की मात्रा पर विचार कर कोई उसे पूर्ण संस्कृत समाज का अंग ही समझ सकता है परंतु उसके जीवन का व्यवहारिक रूप एक दूसरी ही करुण गाथा कहता है। संभवत पौराणिक युग में नारी का महिमामंडन होने के कारण उसे धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टि से दैवीय स्थान देकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ली गई, उसकी व्यवहारिक, सामाजिक, आर्थिक कठिनाइयों की और किसी का ध्यान ही नहीं गया। मातृत्व की गरिमा से गुरु और पत्नीत्व के सौभाग्य से ऐश्वर्याशालिनी होकर भी भारतीय नारी अपने व्यवहारिक जीवन में सबसे शूद्र और रंक कैसे रह सकी, यह चिंतन का विषय है। समाज ने नारी को इतना परतंत्र, अपाहिज और बेसहारा क्यों बना दिया कि उसका स्वस्थ जीवन बंदिनी के समान हो गया। आदिम युगीन नारी की भांति वह आज भी पदाक्रांत, पीड़ित, शोषित और वंचित है। विडंबना यह कि वह आज भी पुरुष के हाथों की कठपुतली है। सामाजिक दृष्टि में अपने जीवनयापन के लिए वह आज भी परमुखापेक्षी है। समाज ने स्त्री के संबंध में अर्थ का ऐसा विभाजन किया कि साधारण से लेकर संपन्न वर्ग तक की नारियों की स्थिति दयनीय बनी हुई है। आज भले ही औरतों ने हर मोर्चे पर अपने को पुरुषों से इक्कीस साबित किया है, लेकिन कहीं ना कहीं उन्हें आज भी हीनतर होने का दंश झेलना ही पड़ता है। महादेवी वर्मा ने अपने प्रगतिशील लेखन से पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता को मिटाने का भरसक प्रयास किया है। महादेवी ने अपने सांसारिक जीवनानुभव के आधार पर सदियों से चली आ रही परतंत्रता की जंजीरों को तोड़ने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। वह नारी को जागृत करने के लिए कृत संकल्प है। महादेवी वर्मा नारी